



金子光晴
草野心平

日本詩人全集

24

新潮社版

日本詩人全集
24

草金子心光平晴

昭和四十二年七月二十日印刷
昭和四十二年八月十日發行



価 330 円

Printed in Japan

1967・8

© M. KANEKO
S. KUSANO

著作者	編 者	發 行 者	發 行 所	印 刷 所	製 本 所
草金子心光平晴	山安佐藤亮一郎	東京都新宿区矢来町七一 電話(03)221-1111 振替東京六八	株式会社新潮社	大日本印刷株式会社	大進堂
草金子心光平晴	山安佐藤亮一郎	東京都新宿区矢来町七一 電話(03)221-1111 振替東京六八	株式会社新潮社	大日本印刷株式会社	大進堂
草金子心光平晴	山安佐藤亮一郎	東京都新宿区矢来町七一 電話(03)221-1111 振替東京六八	株式会社新潮社	大日本印刷株式会社	大進堂
草金子心光平晴	山安佐藤亮一郎	東京都新宿区矢来町七一 電話(03)221-1111 振替東京六八	株式会社新潮社	大日本印刷株式会社	大進堂

（乱丁、落丁本はお取替えいたします）

女たちへのエレジー

ニッパ椰子の唄

洗面器

落下傘

あけがたの歌

序詩

天使

落下傘

寂しさの歌

鬼の児の唄

卵の唄

鬼の児誕生
鬼の児放浪

恋

歯 空 空 空

畜 空 空 空

天 空 空

蛾 蛾 蛾 蛾 蛾 蛾 蛾
VII VI V IV III II I

鬼 昇天 肌 骨片の歌 血 禿
と詩人

空 空 空 空 空 空

合 合 夫 夫 夫 夫

蛾
VIII

玉 球

牡丹 湖畔吟

夜 雨

富士 三点

床

人間の悲劇

かなしい真珠採りの歌

——自叙伝について

山之口謙君に

女たちへのいたみうた

非情

アルビノス

太陽

葦

非情

★

日本人について

海と詩

リアルの問題

着物を剥がれた女達

★

解説

金子光晴年譜

(安東次男)

三
一
四

二
一
三
一
二

一
三
三
二
一

平心野心野草

春殖 偃僂もいる風景 ギケ口

草野心平・人と作品
(山本太郎) 一三

(山本太郎) 一三

冬眠

亡靈

第一百階級

Beethoven: Spring Sonata

序

秋の夜の会話

(高村光太郎) 一七

後記
蛙になる

ヤマカガシの腹の中から仲間に
言づゝ、ゞの言三

告げるケリケの言葉

逆歯に死ぬる同胞一九

鮑
與
蚌

いのか

青大将に突撃する頭の中の喚声

蛙は地べたに生きる天国である

蛇祭り行進

春殖	「九月」
ギケロ	「九月」
亡靈	「九月」
冬眠	「九月」
Beethoven: Spring Sonata	「九月」
第一印象	「九月」
蛙になれ	「九月」
後記	「九月」
明日は天氣だ	「九月」
子供に。	「十月」
仲間ノ家へ	「十月」
血の話	「十月」
広州を去る直前	「十月」
医者へ行く	「十月」
風邪には風	「十月」

母岩

芝浦埋立地にて

宇宙塵

久板卯之助の死

劫初からの時間の中で

ドストエフスキイ

春

蛙

さようなら一萬年

河童と蛙

青い花

祈りの歌

on the tree.

覚書

絶景

Bering-Fantasy

窓

猛烈な天

石

生活

空間

大ガラスの下

仏租界にて

上海挽歌

桃

富士山

作品第参

作品第肆

103
104
105
106
107
108
109
110
111
112
113
114
115
116
117
118
119
120
121
122
123
124
125
126
127
128
129
130
131
132
133
134
135
136
137
138
139
140
141
142
143
144
145
146
147
148
149
150
151
152
153
154
155
156
157
158
159
160
161
162
163
164
165
166
167
168
169
170
171
172
173
174
175
176
177
178
179
180
181
182
183
184
185
186
187
188
189
190
191
192
193
194
195
196
197
198
199
200
201
202
203
204
205
206
207
208
209
210
211
212
213
214
215
216
217
218
219
220
221
222
223
224
225
226
227
228
229
230
231
232
233
234
235
236
237
238
239
240
241
242
243
244
245
246
247
248
249
250
251
252
253
254
255
256
257
258
259
260
261
262
263
264
265
266
267
268
269
270
271
272
273
274
275
276
277
278
279
280
281
282
283
284
285
286
287
288
289
290
291
292
293
294
295
296
297
298
299
300
301
302
303
304
305
306
307
308
309
310
311
312
313
314
315
316
317
318
319
320
321
322
323
324
325
326
327
328
329
330
331
332
333
334
335
336
337
338
339
340
341
342
343
344
345
346
347
348
349
350
351
352
353
354
355
356
357
358
359
360
361
362
363
364
365
366
367
368
369
370
371
372
373
374
375
376
377
378
379
380
381
382
383
384
385
386
387
388
389
390
391
392
393
394
395
396
397
398
399
400
401
402
403
404
405
406
407
408
409
410
411
412
413
414
415
416
417
418
419
420
421
422
423
424
425
426
427
428
429
430
431
432
433
434
435
436
437
438
439
440
441
442
443
444
445
446
447
448
449
450
451
452
453
454
455
456
457
458
459
460
461
462
463
464
465
466
467
468
469
470
471
472
473
474
475
476
477
478
479
480
481
482
483
484
485
486
487
488
489
490
491
492
493
494
495
496
497
498
499
500
501
502
503
504
505
506
507
508
509
510
511
512
513
514
515
516
517
518
519
520
521
522
523
524
525
526
527
528
529
530
531
532
533
534
535
536
537
538
539
540
541
542
543
544
545
546
547
548
549
550
551
552
553
554
555
556
557
558
559
560
561
562
563
564
565
566
567
568
569
570
571
572
573
574
575
576
577
578
579
580
581
582
583
584
585
586
587
588
589
590
591
592
593
594
595
596
597
598
599
600
601
602
603
604
605
606
607
608
609
610
611
612
613
614
615
616
617
618
619
620
621
622
623
624
625
626
627
628
629
630
631
632
633
634
635
636
637
638
639
640
641
642
643
644
645
646
647
648
649
650
651
652
653
654
655
656
657
658
659
660
661
662
663
664
665
666
667
668
669
670
671
672
673
674
675
676
677
678
679
680
681
682
683
684
685
686
687
688
689
690
691
692
693
694
695
696
697
698
699
700
701
702
703
704
705
706
707
708
709
7010
7011
7012
7013
7014
7015
7016
7017
7018
7019
7020
7021
7022
7023
7024
7025
7026
7027
7028
7029
7030
7031
7032
7033
7034
7035
7036
7037
7038
7039
70310
70311
70312
70313
70314
70315
70316
70317
70318
70319
70320
70321
70322
70323
70324
70325
70326
70327
70328
70329
70330
70331
70332
70333
70334
70335
70336
70337
70338
70339
70340
70341
70342
70343
70344
70345
70346
70347
70348
70349
70350
70351
70352
70353
70354
70355
70356
70357
70358
70359
70360
70361
70362
70363
70364
70365
70366
70367
70368
70369
70370
70371
70372
70373
70374
70375
70376
70377
70378
70379
70380
70381
70382
70383
70384
70385
70386
70387
70388
70389
70390
70391
70392
70393
70394
70395
70396
70397
70398
70399
703100
703101
703102
703103
703104
703105
703106
703107
703108
703109
703110
703111
703112
703113
703114
703115
703116
703117
703118
703119
703120
703121
703122
703123
703124
703125
703126
703127
703128
703129
703130
703131
703132
703133
703134
703135
703136
703137
703138
703139
703140
703141
703142
703143
703144
703145
703146
703147
703148
703149
703150
703151
703152
703153
703154
703155
703156
703157
703158
703159
703160
703161
703162
703163
703164
703165
703166
703167
703168
703169
703170
703171
703172
703173
703174
703175
703176
703177
703178
703179
703180
703181
703182
703183
703184
703185
703186
703187
703188
703189
703190
703191
703192
703193
703194
703195
703196
703197
703198
703199
703200
703201
703202
703203
703204
703205
703206
703207
703208
703209
703210
703211
703212
703213
703214
703215
703216
703217
703218
703219
703220
703221
703222
703223
703224
703225
703226
703227
703228
703229
703230
703231
703232
703233
703234
703235
703236
703237
703238
703239
703240
703241
703242
703243
703244
703245
703246
703247
703248
703249
703250
703251
703252
703253
703254
703255
703256
703257
703258
703259
703260
703261
703262
703263
703264
703265
703266
703267
703268
703269
703270
703271
703272
703273
703274
703275
703276
703277
703278
703279
703280
703281
703282
703283
703284
703285
703286
703287
703288
703289
703290
703291
703292
703293
703294
703295
703296
703297
703298
703299
703300
703301
703302
703303
703304
703305
703306
703307
703308
703309
703310
703311
703312
703313
703314
703315
703316
703317
703318
703319
703320
703321
703322
703323
703324
703325
703326
703327
703328
703329
703330
703331
703332
703333
703334
703335
703336
703337
703338
703339
703340
703341
703342
703343
703344
703345
703346
703347
703348
703349
703350
703351
703352
703353
703354
703355
703356
703357
703358
703359
703360
703361
703362
703363
703364
703365
703366
703367
703368
703369
703370
703371
703372
703373
703374
703375
703376
703377
703378
703379
703380
703381
703382
703383
703384
703385
703386
703387
703388
703389
703390
703391
703392
703393
703394
703395
703396
703397
703398
703399
703400
703401
703402
703403
703404
703405
703406
703407
703408
703409
703410
703411
703412
703413
703414
703415
703416
703417
703418
703419
703420
703421
703422
703423
703424
703425
703426
703427
703428
703429
703430
703431
703432
703433
703434
703435
703436
703437
703438
703439
703440
703441
703442
703443
703444
703445
703446
703447
703448
703449
703450
703451
703452
703453
703454
703455
703456
703457
703458
703459
703460
703461
703462
703463
703464
703465
703466
703467
703468
703469
703470
703471
703472
703473
703474
703475
703476
703477
703478
703479
703480
703481
703482
703483
703484
703485
703486
703487
703488
703489
703490
703491
703492
703493
703494
703495
703496
703497
703498
703499
703500
703501
703502
703503
703504
703505
703506
703507
703508
703509
703510
703511
703512
703513
703514
703515
703516
703517
703518
703519
703520
703521
703522
703523
703524
703525
703526
703527
703528
703529
703530
703531
703532
703533
703534
703535
703536
703537
703538
703539
703540
703541
703542
703543
703544
703545
703546
703547
703548
703549
703550
703551
703552
703553
703554
703555
703556
703557
703558
703559
703560
703561
703562
703563
703564
703565
703566
703567
703568
703569
703570
703571
703572
703573
703574
703575
703576
703577
703578
703579
703580
703581
703582
703583
703584
703585
703586
703587
703588
703589
703590
703591
703592
703593
703594
703595
703596
703597
703598
703599
703600
703601
703602
703603
703604
703605
703606
703607
703608
703609
703610
703611
703612
703613
703614
703615
703616
703617
703618
703619
703620
703621
703622
703623
703624
703625
703626
703627
703628
703629
703630
703631
703632
703633
703634
703635
703636
703637
703638
703639
703640
703641
703642
703643
703644
703645
703646
703647
703648
703649
703650
703651
703652
703653
703654
703655
703656
703657
703658
703659
703660
703661
703662
703663
703664
703665
703666
703667
703668
703669
703670
703671
703672
703673
703674
703675
703676
703677
703678
703679
703680
703681
703682
703683
703684
703685
703686
703687
703688
703689
703690
703691
703692
703693
703694
703695
703696
703697
703698
703699
703700
703701
703702
703703
703704
703705
703706
703707
703708
703709
703710
703711
703712
703713
703714
703715
703716
703717
703718
703719
703720
703721
703722
703723
703724
703725
703726
703727
703728
703729
7037230
7037231
7037232
7037233
7037234
7037235
7037236
7037237
7037238
7037239
70372310
70372311
70372312
70372313
70372314
70372315
70372316
70372317
70372318
70372319
70372320
70372321
70372322
70372323
70372324
70372325
70372326
70372327
70372328
70372329
70372330
70372331
70372332
70372333
70372334
70372335
70372336
70372337
70372338
70372339
70372340
70372341
70372342
70372343
70372344
70372345
70372346
70372347
70372348
70372349
70372350
70372351
70372352
70372353
70372354
70372355
70372356
70372357
70372358
70372359
70372360
70372361
70372362
70372363
70372364
70372365
70372366
70372367
70372368
70372369
70372370
70372371
70372372
70372373
70372374
70372375
70372376
70372377
70372378
70372379
70372380
70372381
70372382
70372383
70372384
70372385
70372386
70372387
70372388
70372389
70372390
70372391
70372392
70372393
70372394
70372395
70372396
70372397
70372398
70372399
703723100
703723101
703723102
703723103
703723104
703723105
703723106
703723107
703723108
703723109
703723110
703723111
703723112
703723113
703723114
703723115
703723116
703723117
703723118
703723119
703723120
703723121
703723122
703723123
703723124
703723125
703723126
703723127
703723128
703723129
703723130
703723131
703723132
703723133
703723134
703723135
703723136
703723137
703723138
703723139
703723140
703723141
703723142
703723143
703723144
703723145
703723146
703723147
703723148
703723149
703723150
703723151
703723152
703723153
703723154
703723155
703723156
703723157
703723158
703723159
703723160
703723161
703723162
703723163
703723164
703723165
703723166
703723167
703723168
703723169
703723170
703723171
703723172
703723173
703723174
703723175
703723176
703723177
703723178
703723179
703723180
703723181
703723182
703723183
703723184
703723185
703723186
703723187
703723188
703723189
703723190
703723191
703723192
703723193
703723194
703723195
703723196
703723197
703723198
703723199
703723200
703723201
703723202
703723203
703723204
703723205
703723206
703723207
703723208
703723209
703723210
703723211
703723212
703723213
703723214
703723215
703723216
703723217
703723218
703723219
703723220
703723221
703723222
703723223
703723224
703723225
703723226
703723227
703723228
703723229
703723230
703723231
703723232
7

作品第質

作品第拾壹

作品第貳拾貳

三
三
三
三

ごびらつふの独白
古虎自伝

ガリビラ自伝

中華民国の藍に就いて

日本沙漠

わが抒情詩

日本沙漠

土蔵

浦安ニテ

月蛾

正倉院狩獵文銀壺

誕生祭

思ひは猛烈な羊齒類のなかに

桂離宮竹林の夜

るるる葬送

三
三
三
三

三
三
三
三

牡丹圈

大塩盤

牡丹圈

牡丹圈

宇宙線驟雨のなかで

岩手荒巻

上小川村

天

未来のはてから振りかえると

眠つてゐる肉体

胃袋

悔恨

冥

金魚

ばつぶくどん

第四の蛙

煙

Aコンドルの禿の由来

黒い蛙

李太白と蛙

しまつたと今でも思う

蛇を呑んだ蛙

勝手なコーラス

マンモスの牙

（私小説的な）

雪の一日

肺結核に関する二つの作品

死

（雨の円覚寺の椿）

金魚

雲雀

雨の円覚寺の椿

（沙漠と山と海のほとりで）

夜の海

エリモ岬

年輪

毛

毛

毛

金
子
光
晴

金子光晴・人と作品

金子光晴、本名金子保和は、ちょうど日清戦争が終わったばかりの、明治二十八年十二月二十五日に、愛知県津島町に、大鹿和吉、同りようの三男として生まれた。生家は土地代々の酒屋だったが、父和吉は若くから興業や鉱山に夢をいただき、家産をつぶして名古屋に出た。そこで親戚の女髪結いのもとにあずけられていた幼い大鹿保和を、建築請負「清水組」の名古屋支店長金子莊太郎の妻すみが、たまたま見かけて養子として引き取ったのは、金子の三歳のときだつた。当時すみもまた十六歳の乙女妻であつたといふから、いわば人形のような気易さで貰い受けたものであろう。連れ帰つた保和少年にすみは、さつそく友禅染の女の児の着物をきせ、髪もおたばこ盆や稚兒^{ちご}髷に結わせて育てた。家にはすみのほかに莊太郎の未婚の妹たちつまり二人の叔母がいたが、彼女たちはいつしょになつてそういう保和少年におしろいを塗り玉虫色の口紅をつけ、おもしろがつて外を連れ歩いたといふ。金子は、かなり異常で倒錯した幼年時代を送つたことになる。詩集『こがね虫』の中の、

ああ、盲目の蘆薈^{ろくわい}や焚香^{かんこう}にむせびつつ、少年は嗤ふべき見せ物であつた。

（『金龜子』より）

というのは、もちろんその後の保和少年の性の目ざめに関わりのあることだろうが、この陰画的意識のそもそもの起りは、右のような幼年時代への一種甘酸っぱい悔恨にある。そのころ叔母たちの乳房のあいだにはさまれて見た影絵芝居のことを、後年詩人はつぎのように書いている。「風呂と称ぶ一種の幻燈器械で幕に映す彩色のあるうごく画で、福助がおじぎをしたり、牡丹に蝶が舞つたりといふ簡単なものであつた。だが、その候忽として、消えたり、あらわれたりする幻怪なまぼろしと、それをみてわれを忘れた子供心の感動を、いまも忘れることができない。」（自伝『詩人』）

これはこの時代に育つた者なら誰にでもある記憶のようで、じつはそうではない。紅おしろいをつけた女の児の姿で、ということはボジティヴなを取り戻そうとする潜在的欲求の中で、これを観たといふことが、そののち金子光晴という詩人の資質を、作り上げてゆくことになるのである。

その後の保和少年は、養父の勤務の関係で京都ついで東京と移り住むあいだ、ゆがんだ性の目ざめ、ひよわな少年の虚栄がさせた盜み、家出など、金子のことばをかりれば「稚い罪の意識にさいなまれつゝ、享楽と、日々の不安のなかで、明日をもしらぬおもいで生きていた」という異常な経験を重ねることになる。その無賴の少年が、これまた半ば虚栄と倦怠からかりそめの詩作に手を染め、いつしかそれが生涯手放すことのできぬ伴侶となつてゆくまでの経過は、見ようによつてはその詩作よりも実人生の方がよほど面白い眺めであつて、その点、金子光晴という詩人のあり方は、明治、大正の諸詩人とは、そもそもの出发からして大いに異なつていた。

「なにかが出発点でまちがつてゐる。なにかのひどい犠牲になつて、じぶんがここにいる。そういうつた感

じは、二十代のはじめからずっと僕の心をしめていた疑念であった。青春時代の異性との対決に、僕のようく悲劇的に、苦行し、捨身して、いつさいを投げて立ちむかつた愚者もまた、少いだろう。（中略）じぶんのことばかりしか考えていなかつた僕は、彼女たちを毛すじ程も理解しようとつとめなかつたし、彼女たちは彼女たちで、じぶん達が僕をそんなに苦しめたことに気づかなかつたろう。ともかくも、そのときの失敗感は、ながく僕の一生に劣等感となつてのこり、僕が今日猶^{なお}ろくろくとして志をえないこと、この人生が不平不満でいたたまれないこと、かんじんな土壇場でいつも、充分な自力が發揮できないことなどにつながつているようだ。どんなに僕が上手に詩をつくれる時がくるとしても、それだけで償いがつくとは考えられない。僕のやりたいことは別にあつて、その機会は永久にのがしてしまつた。文学者や、芸術家でいくらえらくなつてもしかたがない。政治家や、軍人でもない。商人でも、冒険家でもない。僕はただ、絶代の美貌にめぐまれて、それが衰えぬ若さのあいだに死にたかったのだ。それならば、恋愛するも、不要だつたのだが。」（『詩人』）

こういう金子が、後日、つぎのよくな詩を作るにいたつたとしても、それを世間を斜眼視するひねくれ者の詩といふわけにはゆかないのだ。

人を感動させるやうな作品を
忘れてはならない。
それは芸術家のすることではない。

少くとも、すぐれた芸術家の。

すぐれた芸術家は、誰からも
はなもひつかけられず、始めから
反古にひとしいものを書いて、
永恒に埋没されてゆく人である。

たつた一つ俺の感動するのは、
その人達である。いい作品は、
国や、世紀の文化と関係がない。
つくる人達だけのものなのだ。

他人のまねをしても、盗んでも、
下手でも、上手でもかまはないが、
死んだあとで掘出され騒がれる
恥だから、そんなへマだけするな。

(「偏」—『屁のやうな歌』)